विश्व पर्यावरण दिवस

05 जून, 2014

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड

आँचलिक कार्यालय (मध्य)

भोपाल

विश्व पर्यावरण दिवस 05 जून, 2014 के अवसर पर पर्यावरण संरक्षण सप्ताह का आयोजन

पर्यावरण का महत्व

पर्यावरण व प्रकृति के अनेक घटकों में जल, वायु, जीव–जन्तु, सूक्ष्म जीव तथा वनस्पति प्रमुख हैं । पर्यावरण की स्वच्छता हेतु इसके घटकों में आपसी सामन्जस्य होना आवश्यक है क्योंकि यह एक दूसरे के पूरक होते हैं, तथा इस ताने–बाने में किसी भी प्रकार के प्रतिकूल परिवर्तन से पर्यावरण के सभी घटक प्रभावित होते हैं ।

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा स्टॉकहोम में दिनांक 05 जून से 16 जून, 1972 को विश्व को ह्यूमन इंवायरनमेंट, समान विचारधारा व सिद्धान्तों के प्रति प्रेरित करने तथा दिशा प्रदान करने के उद्देश्य से सदस्य देशों की एक बैठक का आयोजन किया था । इस बैठक में विश्व पर्यावरण के संरक्षण व भविष्य की चुनौतियों पर चर्चा की गई इस बैठक में 113 देश के प्रतिनिधि, 19 शासकीय संस्थायें तथा 400 गैर सरकारी संस्थानों ने भाग लिया था ।

बैठक में पर्यावरणीय मुद्दों का निरन्तर चिंतन व जीवंतता बनाये रखने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 05 जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस' मनाने का संकल्प लिया गया ताकि विकास के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण एवं संतुलन की दिशा में निरंतर कार्य हो सके । उपरोक्त बैठक में भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरागांधी ने भाग लिया था तथा स्वदेश वापसी के बाद से ही पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में संवैधानिक प्रावधानों को लागू करने का कार्य प्रारंभ हुआ । इसके बाद भारत में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कदम उठाते हुए प्रारंभिक रूप में जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम, 1974 तत्पश्चात् वायु

(प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम, 1981 लागू किया गया तथा कालांतर में समय व परिस्थिति के अनुसार विभिन्न प्रदूषणकारी तत्वों की जलिटताओं के आधार पर समुचित प्रबंधन हेतु सर्वमान्य व प्रभावी कानून बनाए गए । पर्यावरण संबंधी नियमों के अनुपालन की जिम्मेदारी केन्द्रीय स्तर पर पर्यावरण एवं वन मंत्रालय तथा केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड तथा राज्य स्तर पर राज्य सरकारों एवं राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों को दी गई ।

प्रतिवर्ष विश्व पर्यावरण दिवस की मेजबानी किसी एक देश द्वारा की जाती है । वर्ष 2011 में भारत ने इसकी मेजबानी की थी तथा इस वर्ष केरेबियाई द्वीप समूह के एक छोटे से देश बारबाडोस के द्वारा इसकी मेजबानी की जा रही है । यह द्वीप सभी तरफ से समुद्र से घिरा हुआ है तथा इसका अपना विशेष पर्यावरण व जैव विविधता है । इस वर्ष का स्लोगन 'राइज़ योर वॉइस नॉट सी लेवल' है जो बढ़ते समुद्र तल से उत्पन्न होने वाली भविष्य की विषम पर्यावरणीय व सामाजिक परिस्थितियों से सावधान रहने एवं पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सक्षम कार्यवाही करने के उद्देश्य को दर्शाता है ।

प्रत्येक वर्ष ग्लोबल वार्मिंग के कारण ध्रुवों पर ग्लेशियर पिघलने की गति बढ़ती जा रही है फलस्वरूप समुद्र के तल में असामान्य रूप से परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं जो कि सीमावर्ती क्षेत्रों व छोटे द्वीपों के लिए चेतावनी है, क्योंकि इससे उनके अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लग रहा हे । सामान्यतः समुद्र का उपयोग जलमार्ग के रूप में किया जाता है । इससे इसके किनारों पर बंदरगाह का विकास होता है तथा स्थानीय शहरों का विकास व रोजगार का सृजन भी होता है । परन्तु समुद्र तल में उत्तरोत्तर बढ़ोतरी होती रही तो छोटे द्वीप व समुद्र सीमा पर बसे व्यावसायिक शहर जलमग्न हो सकते हैं । इसके फलस्वरूप एक बड़ी आबादी का पलायन, कृषि उत्पादन में कमी, स्वस्च्छ जल उपलब्धता का संकट एवं मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव इसकी भयावहता को प्रकट करती है ।
प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन तथा अनुचित मानवीय क्रियाकलापों से पर्यावरण को अपूर्णीय क्षति पहुंच रही है इसके अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं परन्तु भविष्य की

कल्पना कर हम इसे संरक्षित व और अधिक लाभकारी बनाने का प्रयास कर सकते हैं । इस कार्य में संवैधानिक नियमों के समुचित परिपालन के साथ स्वप्रेरित भाव से पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में जन–सामान्य की भागीदारी तथा व्यापक जन–जागरूकता आवश्यक है। अतः पर्यावरणीय मुद्दों के संदर्भ में सतत् सुधारात्मक कार्य एवं विकास के साथ सामन्जस्य स्थापित करने के उद्देश्य से पर्यावरण दिवस का आयोजन एक अति महत्वपूर्ण कार्य है ।

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण मापन व नियंत्रण के क्षेत्र में अनेक वैज्ञानिक और तकनीकी कार्यों का सम्पादन करता है ताकि प्रदूषण का स्तर न्यूनतम किया जा सके । बोर्ड के विविध कार्यों में एक कार्य जन–सामान्य को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना तथा व्यक्तिगत स्तर से संस्थागत स्तर तक पर्यावरण संरक्षण के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्रदान करना है ।

यू.एन.ई.पी. द्वारा दिए गए इस वर्ष के पर्यावरण दिवस के स्लोगन को ध्यान में रखते हुए तथा "Think Globally Act Locally" की तर्ज पर जन–जागृति के उद्देश्य से आँचलिक कार्यालय, भोपाल द्वारा समाज के सभी वर्गों तक संदेश पहुंचाने हेतु विभिन्न कार्यक्रम की श्रंखला का आयोजन दिनांक 29 मई, 2014 से 05 जून, 2014 के मध्य किया गया । जिसके अंतर्गत निम्नलिखित कार्यक्रम संपादित किए गए :–

1. **<u>पर्यावरण क्विज प्रतियोगिता</u>** – पर्यावरण सप्ताह मनाने का प्रारंभ स्थानीय कमला नेहरू स्कूल से किया गया जहां समर कैम्प के दौरान लगभग 200 बच्चे कार्यक्रम के प्रतिभागी बने तथा आँचलिक कार्यालय द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता में भाग लिया । कार्यक्रम के प्रारंभ में श्री अनिल रावत, वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक द्वारा

प्रतिभागी बच्चों व अन्य अतिथियों को प्रदूषण नियंत्रण के क्षेत्र में कार्यालय द्वारा किये जा रहे प्रयासों व योजनाओं के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रदान की तथा ऊर्जा व जल संरक्षण के संबंध में दैनिक जीवन में किये जा सकने वाले कार्यो एवं ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभाव के बारे में जानकारी प्रदान की गई।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में डॉ. पौलामी सी. पाटिल, कनिष्ट वैज्ञानिक सहायक द्वारा उपस्थित बच्चों को जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, नगरीय ठोस अपशिष्ट, इलेक्ट्रॉनिक व ओजोन परत क्षरण, ग्लोबल वार्मिंग के कुप्रभाव तथा जैव विविधता पर पड़ने वाले पर्यावरणीय प्रभावों के बारे में जानकारी प्रदान की तथा विश्व परिदृश्य की वर्तमान स्थिति से बच्चों को अवगत कराया गया। कार्यक्रम के आगामी चरण में श्री संजय कुमार मुकाती, कनिष्ट वैज्ञानिक

सहायक द्वारा ध्वनि व वायु प्रदूषण प्रबोधन में उपयोग होने वाले उपकरणों का जीवंत प्रदर्शन कर दिखाया गया तथा छात्रों की जिज्ञासाओं को शांत किया गया । कार्यक्रम के अंत में दिए गए व्याख्यानों पर आधारित एक पर्यावरणीय क्विज का आयोजन किया गया । इसमें सभी आयु वर्ग के बच्चों तथा उपस्थित शिक्षकों द्वारा भी बहुत ही उत्साह से भाग लिया गया तथा क्विज में सही उत्तर देने वाले 30 बच्चों को पुरस्कृत भी किया गया । उपरोक्त क्विज के आयोजन का मूल उद्देश्य बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना तथा उन्हें प्रारंभ से ही पर्यावरण हितैषी गुणों से

अवगत कराना था । कार्यक्रम के दौरान बच्चों को यह शपथ भी दिलवाई गई कि वे अपने जन्म दिवस व अन्य प्रमुख अवसरों पर पौधारोपण करेंगे तथा वृक्ष बनने तक उसकी देखभाल करेंगे । कार्यक्रम में घरेलु दैनिक जीवन में किस प्रकार से ऊर्जा, पानी व अन्य प्राकृतिक संसाधनों का मितव्ययिता से उपयोग कर पर्यावरण संरक्षण सकते हैं, इस संबंध में भी जानकारी प्रदान की गई ।

2. **<u>पर्यावरण दौड़</u>** – पर्यावरण के प्रति आम–जनमानस में जन–जागरूकता के उद्देश्य से मध्यप्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा स्थानीय तात्याटोपे स्टेडियम में 'रन भोपाल फॉर एनवाइरनमेंट' का आयोजन किया गया । इसमें लगभग 08 से 10 हजार स्थानीय लोगों भाग लिया जिसमें सभी आयु वर्ग के लोग शामिल थे । स्थानीय नर्सिंग होम एशोसिएशन द्वारा भी इसमें भाग लिया गया तथा शहर के जाने माने चिकित्सक भी अपने स्टॉफ के साथ दौड़ में प्रतिभागी बने । दौड़ का आयोजन शहर के प्रमुख मार्ग लिंक रोड क्रमांक 1 पर लगभग 05 किलोमीटर (तात्याटोपे स्टेडियम से जयप्रकाश अस्पताल एवं वापस) तक किया गया, मार्ग के दोनों ओर पर्यावरण संरक्षण संबंधी नारे लिखे गए थे तथा जो स्थानीय रहवासी व आम जनता इस आयोजन में प्रत्यक्ष रूप से शामिल नहीं हुए थे उन्हें भी इस दौड़ के माध्यम से पर्यावरण बचाने का संदेश पहुंचाया गया । आँचलिक कार्यालय के लगभग सभी अधिकारी व कर्मचारियों द्वारा उक्त आयोजन में भाग लिया गया तथा अपने–अपने

रहवासी क्षेत्रों में कार्यक्रम का प्रचार व प्रसार कर अधिक से अधिक लोगों को इससे जुड़ने हेतु सार्थक प्रयास किए । आँचलिक कार्यालय के श्री संजय कुमार मुकाती व श्री प्रवीण कुमार जैन द्वारा 05 किलोमीटर ट्रेक पर दौड़ लगाई तथा बैनर पर लिखे पर्यावरण संरक्षण संबंधी स्लोगन के माध्यम से संदेश अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया गया ।

3. **वरिष्ठ नागरिक मंच के माध्यम से पर्यावरणीय संगोष्ठी का आयोजन** – भोपाल स्थित वरिष्ठ नागरिक मंच के साथ एक पर्यावरण संगोष्ठी का आयोजन आँचलिक कार्यालय, भोपाल द्वारा किया गया जो कि नदियों को जोड़ने, नदियों की सफाई तथा उसके पर्यावरणीय क्षेत्र को संरक्षित करने के विषय पर आधारित था । कार्यक्रम का संचालन श्री एस.एस. रघुवंशी, पूर्व अध्यक्ष, मध्यप्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा किया गया तथा शहरी जल प्रदूषण के कारण किस तरह नदियां अपना अस्तित्व खो रही हैं, इस विषय पर अपना उद्बोधन दिया तथा अपने कार्य अनुभव से उपस्थित जन समूह को अवगत कराया।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में आँचलिक अधिकारी द्वारा नदी के परिस्थितिकीय तंत्र की विविधता तथा संरक्षण की जानकारी प्रदान की गई तथा उनके द्वारा नर्मदा, सोन, बेतवा नदी के वर्तमान प्रदूषण की स्थिति व प्रमुख कारणों के बारे में जानकारी प्रदान की गई। साथ ही उन्होंने केन्द्र सरकार की विभिन्न योजनाएं जो नदी संरक्षण से संबंधित हैं उनके बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की ।

कार्यक्रम के अगले चरण में डॉ. आर.पी. मिश्रा, वैज्ञानिक 'ग' द्वारा गंगा नदी सफाई योजना तथा नदी संरक्षण की दिशा में किए गए कार्यों से संबंधित सारगर्भित

व्याख्यान पॉवर पॉइन्ट के माध्यम से दिया । अनेक वरिष्ठ नागरिकों ने भी विभिन्न विभागों में रहते हुए जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य की जानकारी रखते थे उनकी जिज्ञासाओं को कार्यक्रम के दौरान शांत किया गया तथा उक्त परियोजना पर संगोष्ठी में उपस्थित सदस्यों द्वारा विचार व्यक्त किए गए । उपरोक्त संगोष्ठी का महत्व इसलिए भी है क्यों कि संगोष्ठी में मौजूद सभी वरिष्ठ नागरिक अनेक गैर सरकारी संस्थान तथा अन्य शैक्षणिक संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं, अतः केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के कार्यों व प्रदूषण की रोकथाम संबंधी उपयों को और अधिक प्रसारित करने में सहयोग कर सकते हैं ।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर राष्ट्रवादी गांधीवादी जन जागृति मंच के प्रमुख संयोजक श्री श्याम नारायण चौकसे द्वारा भी अपने विचार रखे गए तथा उन्होंने अमानक पॉलिथीन के उपयोग के दुष्परिणामों के बारे में जानकारी दी तथा किस तरह से कानूनी प्रक्रिया द्वारा इस आदेश को लागू करवाया है इस बाबत् जानकारी प्रदान की । कार्यक्रम के अंत में डॉ. अनूप चतुर्वेदी द्वारा केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की ओर से उपस्थित गणमान्य नागरिकों का आभार व्यक्त किया गया ।

4. **<u>वृक्षारोपण कार्यक्रम</u>** – विश्व पर्यावरण दिवस (05 जून, 2014) के अवसर पर आँचलिक कार्यालय द्वारा कार्यालय प्रांगण में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया इसमें कार्यालय परिसर में स्थित अन्य शासकीय कार्यालय जैसे आवास संघ मर्यादित एवं सहकारी उपभोक्ता संघ व अन्य कार्यालयों के अधिकारियों द्वारा भी

भाग लिया गया तथा पर्यावरण संरक्षण पर अपने विचार रखे तथा किस तरह से व्यक्तिगत स्तर पर इस कार्य को महत्ता प्रदान की जा रही है । इस विषय पर अपने–अपने विचार व्यक्त किए तथा पर्यावरण संरक्षण हेतु शपथ ली गई ।

5. **पर्यावरण संगोष्ठी** – कार्यक्रम के अंतिम सोपान में आँचलिक कार्यालय में पर्यावरण संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. आर.पी. मिश्रा, सेवानिवृत्त प्राचार्य (पर्यावरणविद्, भोपाल) द्वारा 'मदर अर्थ' तथा "Be like a bird and not a falcon that kills them" विषय को पर्यावरण से संबद्ध कर विस्तृत व्याख्यान दिया गया । इसमें पर्यावरण में अनेक पहलुओं का समावेश किया गया तथा बढ़ते शहरीकरण, घटते जलस्रोत तथा प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन करने से बिगड़ रहे पर्यावरण

संतुलन के बारे में जानकारी प्रदान की गई । इस अवसर पर वेदों, उपनिषदों व प्राचीन इतिहास में पर्यावरण संरक्षण को कितना महत्व दिया है इसका वर्णन किया गया तथा पशु, पक्षी, पौधे किस तरह पुरातन काल में मानव जीवन का अभिन्न अंग थे पर भी प्रकाश डाला । तत्समय किस तरह पर्यावरण संरक्षण को आस्था व भक्ति से जोड़कर प्रकृति से भावनात्मक संबंध बनाए गए थे इसका भी व्याख्यान किया । संगोष्ठी में उपस्थित प्रतिभागियों से इस बाबत् भी चर्चा हुई कि किस प्रकार से नवीन सोच के साथ कार्य किया जाना चाहिए क्योंकि वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण का कार्य जटिल व

बहुआयामी हो गया है । अतः परम्परागत विचार व कार्यों से वर्तमान परिपेक्ष्य में समुचित प्रबंधन संभव नहीं है । संगोष्ठी के दौरान कार्यालय के अन्य प्रतिभागियों ने भी अपने–अपने विचार प्रस्तुत किए तथा पर्यावरणीय नियमों के प्रभावी क्रियान्वयन व वैश्विक स्तर पर प्रदूषण स्तर को न्यूनतम रखने में किस तरह नई–नई चुनौतियां आ रही हैं तथा इसके क्या समाधान हो सकते हैं, के बारे में अपने अनुभवों को बताया । कार्यक्रम के अंत में आँचलिक अधिकारी द्वारा संगोष्ठी में उठे विभिन्न पर्यावरणीय मुद्दों को सारगर्भित किया तथा वर्तमान नियमों व उप–नियमों को कैसे प्रभावी रूप से लागू करें, इस बाबत् जानकारी दी । इस अवसर पर उन्होंने गैर परंपरागत ऊर्जा स्रोतों की ओर अधिक ध्यान देने एवं अनुसंधान व विकास के नए आयामों पर प्रकाश डाला तथा इस क्षेत्र में किए जा रहे नवीनतम प्रयासों की जानकारी दी । इसके पश्चात् कार्यक्रम को विराम दिया गया जिसका संचालन डॉ. अनूप चतुर्वेदी द्वारा किया गया।

6. **<u>पॉलीथिन प्रयोग को रोकने हेतु जन जागृति</u>** – वर्तमान में शहरी क्षेत्रों में ठोस अपशिष्ट की समस्या बहुत विकराल रूप ले चुकी है तथा इसमें अधिकतम प्रतिशत घरेलु व व्यवसायिक संस्थानों से निकला प्लास्टिक अपशिष्ट है जो कि नॉन–बायोडिग्रेडेबल होता है जो अनेक तरह के पर्यावरणीय प्रदूषणों का कारक होता है । जन सामान्य को पॉलीथिन अपशिष्ट से पर्यावरण पर पड़ने वाले दीर्घकालिक दुष्प्रभाव के बारे में जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से तथा पॉलीथीन के सीमित या उपयोग न करने के बारे में प्रोत्साहित करने हेतु स्थानीय

साप्ताहिक बाजार व अन्य व्यवसायिक केन्द्रों पर जाकर आँचलिक कार्यालय द्वारा पैम्फलेट वितरण किया गया जिसमें प्लास्टिक अपशिष्ट से होने वाले दुष्परिणामों की जानकारी संकलित थी । उपरोक्त कार्यक्रम के अंतर्गत लोगों से व्यक्तिगत रूप से भी चर्चा की गई तथा सब्जी विक्रेताओं से भी अमानक पॉलीथीन क्रय न करने तथा उसमें सब्जी न बेचने हेतु निवेदन किया गया ।

7. **<u>स्थानीय आद्योगिक क्षेत्र में जन–जागरूकता</u>** – औद्योगिक इकाइयों द्वारा भी विभिन्न प्रकार के प्रदूषकों का उत्सर्जन होता है जिसका दीर्घकालिक प्रभाव होता है अतः पर्यावरण दिवस के अवसर पर स्थानीय औद्योगिक इकाइयों में भी जागरूकता बनाए रखने व पर्यावरण नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से भोपाल के समीप स्थित मंडीदीप औद्योगिक क्षेत्र में मेसर्स ल्यूपिन लैब्स लिमिटेड के परिसर में आयोजित विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में डॉ. आर.पी. मिश्रा, वैज्ञानिक 'ग' एवं श्री राजीव शर्मा, वरिष्ठ तकनीशियन द्वारा भाग लिया गया । इस अवसर पर केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की गतिविधियों के साथ–साथ पर्यावरण की वर्तमान चुनौतियों के संबंध में विस्तृत चर्चा की गई । उपरोक्त अवसर पर क्षेत्र की लघु व मध्यम इकाइयों के प्रतिनिधियों द्वारा भी समारोह में प्रतिभागिता की गई तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति उत्साह प्रकट किया गया ।

8. **<u>व्यक्तिगत प्रयास</u>** – कार्यालय के अन्य कर्मचारियों द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर भी शहर के अन्य पर्यावरणीय संस्थानों द्वारा आयोजित कार्यक्रम जैसे साईकिल रैली, संगोष्ठी, रहवासी कल्याण समिति की बैठकों व चित्रकला प्रतियोगिता आदि में भाग लिया

तथा जनभागीदारी के माध्यम से इस दिवस को सार्थक बनाने का प्रयास किया गया। कार्यालय के कर्मचारियों द्वारा पर्यावरण दिवस के अवसर पर अपने–अपने रहवासी क्षेत्र में भी वृक्षारोपण किया ।

9. **उपसंहार** – आंचलिक कार्यालय, भोपाल द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पर्यावरण सप्ताह का आयोजन किया तथा जन–जागरूकता के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के इस पुनीत कार्य को अनवरत् बनाए रखने के उद्देश्य से वर्ष भर इस तरह के अन्य कार्यक्रम निरन्तर जारी रखने हेतु कार्य योजना भी बनाई क्योंकि केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड स्वच्छ पर्यावरण के लिये प्रतिबद्ध है .... ।

रन भोपाल की झलकियाँ

पर्यावरण संरक्षण के लिए
दौड़ेगा भोपाल

"World Environment Day"
Bhopal Run For Environment
Central Pollution Control Board

पर्यावरण क्विज की झलकियाँ

वरिष्ठ नागरिक मंच के साथ संगोष्ठी

वृक्षारोपण की झलकियाँ

'विश्व पर्यावरण दिवस 05 जून, 2014' आँचलिक कार्यालय, भोपाल